युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 10 कुल पृष्ठ-12 4 से 10 अप्रैल, 2024 दयानन्दाब्द 199 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 चै. कृ.-10

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयंती वर्ष तथा आर्य समाज के महान नेता, त्यागी-तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 87वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में दिनांक 5 से 17 मार्च, 2024 तक चलने वाले चतुर्वेद महयज्ञ में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता, धार्मिक अन्धविश्वास एवं गौहत्या के विरुद्ध लिये गये संकल्प के साथ पूर्णाहुति एवं आर्य परिवार सम्मान समारोह

17 मार्च, 2024 रविवार को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा) में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ

महर्षि दयानन्द जी की स्मृति में केन्द्र सरकार दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक संग्रहालय बनाये - स्वामी आर्यवेश

राष्ट्र के उत्थान में आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान है - पं. माया प्रकाश त्यागी

धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध जन-जागरण अभियान चलाया जाये - स्वामी रामवेश

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला-रोहतक में आयोजित 17वें चतुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष पं. मायाप्रकाश त्यागी, स्वामी रामवेश जी, श्री नरेन्द्र नांदल एडवोकेट, चौ. अजीत सिंह एडवोकेट पूर्व विधायक, समाजसेवी श्री जगमोहन मित्तल, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन प्रवेश आर्या, नशाबंदी परिषद् के प्रधान स्वामी रामवेश जी, स्वामी विजयवेश जी, परिषद् के राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, कोषाध्यक्ष श्री रामनिवास आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री अरविन्द मेहता, हाईकोर्ट के वकील श्री रणधीर सिंह रेढू, भजनोपदेशक परिषद् के राष्ट्रीय प्रधान श्री सहदेव बेधडक जी, हिसार से भजनोपदेशिका बहन कल्याणी आर्या, नरवाना आर्य समाज से श्री इंद्रजीत आर्य, मंत्री श्री विजय

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

महर्षि दयानन्द जी के बाद स्वामी इन्द्रवेश जी हमारे आदर्श थे – स्वामी विजयवेश

भारत में पूर्ण नशाबन्दी की राष्ट्रीय नीति लागू की जाये – स्वामी आदित्यवेश

महर्षि दयानन्द के उपकारों को हम कभी भूल नहीं सकते – नरेन्द्र नांदल

वैदिक समाजवाद से बनेगा समतामूलक समाज – चौ. अजीत सिंह

आर्य समाज सामाजिक आन्दोलन में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाता रहा है – जगमोहन मित्तल

आर्य, कर्मठ युवा नेता श्री अनिल आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष श्री दलबीर आर्य, संन्यास आश्रम गाजियाबाद के उपप्रधान स्वामी सूर्यवेश जी, डॉ. राजपाल आर्य एवं श्री सत्यपाल सरपंच, श्री दयानन्द आर्य जीन्द, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष श्री सज्जन सिंह राठी, मा. जगदीश रधाना, श्री वीरपाल देशवाल, श्री बलवन्त सिंह आर्य मंत्री चौबीसी पंचायत, श्री जोगेन्द्र सिंह आर्य सीसर हिसार, श्री बलवन्त आर्य न्याना, श्री जयवीर आर्य मुकलान, वानप्रस्थ शमशेर सिंह नम्बरदार किसाननेता लाडवा हिसार, डॉ. धर्मवीर आर्य झज्जर, ब्र. वीरदेव आर्य धौड़ झज्जर, मा. प्रदीप कुमार रोहतक, प्रिं. आजाद सिंह बांगड़ सोनीपत, श्रीमती गुलाब कौर धर्मपत्नी श्री जयसिंह ठेकेदार गोहाना, श्री हरिकेश राविश एडवोकेट कैथल, मा. अजतीपाल एवं श्री कर्मपाल आर्य खटकड़, श्री सत्यवान दुर्जनपुर, बहन मुकेश आर्या अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् हरियाणा, आचार्य देवदत्त शास्त्री हिसार, श्री नफे सिंह आर्य एवं डॉ. राजेश आर्य फरमाणा, डॉ. शीशराम आर्य बलम्बा, श्री पवन आर्य आहुलाना, श्री जितेन्द्र आर्य गुमाना, श्री यज्ञवीर सिंह सुंडाना, आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

चुतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर सैकड़ों आर्य परिवारों ने महायज्ञ में सम्मिलित होकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता, धार्मिक अन्धविश्वास, गौहत्या आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आहुति देकर संकल्प लिया।

इस अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक, हरियाणा की ओर से आर्य संन्यासियों

तथा आर्य परिवारों का स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट भेंट करके सम्मानित किया गया।

यज्ञ की पूर्णाहुति का कार्यक्रम विशाल पण्डाल में यज्ञ वेदियों पर सैकड़ों यजमानों की उपस्थिति से अत्यन्त आकर्षक एवं भव्य रहा। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी तथा वेदपाठी श्री अमित शास्त्री एवं श्री अंकित शास्त्री की भूमिका अत्यन्त प्रशंसनीय रही। यज्ञ की पूर्णाहुति करवाते समय स्वामी वेद प्रकाश जी ने यजमानों को यज्ञ के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्रस्तुत की।

इस अवसर पर अपना उद्‌बोधन देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि परिवारों में प्रतिदिन यज्ञ होना चाहिए। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ भी प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है जिसमें हजारों लोगों को कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता, धार्मिक अन्धविश्वास एवं गौहत्या आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध संकल्प दिलवाये जाते हैं। 5 मार्च, 2024 से प्रारम्भ हुए इस चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित लोगों ने भाग लिया और अपनी आहुतियाँ देकर उपरोक्त बुराईयों के विरुद्ध कार्य करने का संकल्प लिया। आहुति देने वालों में वकील, डॉक्टर, ग्राम पंचायतों के सदस्य, सरपंच, जनप्रतिनिधि एवं अन्य गणमान्य लोग सम्मिलित रहे। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित हजारों आर्यजनों का आह्वान किया कि वैदिक मान्यताओं को घर–घर तक पहुँचाया जा रहा है और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष को जगह–जगह कार्यक्रम आयोजित करके उनके विचारों एवं सिद्धान्तों से सामान्य जनमानस को अवगत कराने का अभियान निरन्तर जारी है, इसे और तीव्र गति से आगे बढ़ना होगा। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाजों को स्वामी दयानन्द जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को ध्यान में रखते हुए अपनी–अपनी समाजों में निरन्तर कार्यक्रम आयोजित करके महर्षि के विचारों से जनसामान्य को अगवत कराने का कार्य करते रहना होगा। देश की आजादी से लेकर समाज में फैली हुई कुरीतियों के खिलाफ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी बात प्रखरता के साथ रखी और समाज से कुरीतियों को उखाड़ने का कार्य किया। आज हम सबको भी कमर कस करके पूरे विश्व में स्वामी दयानन्द जी के विचारों से लोगों को अवगत कराने का कार्य करना चाहिए। समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन आर्य समाज को प्रारम्भ करना होगा और समाज को नशामुक्त, पाखण्ड एवं अन्धविश्वास मुक्त, गौहत्या मुक्त, अश्लीलता मुक्त, जातिवाद मुक्त, साम्प्रदायिकता मुक्त, कन्या भ्रूण हत्या एवं नारी उत्पीड़न मुक्त बनाने के लिए देशव्यापी जन–जागरण अभियान चलाने का संकल्प लेना होगा। यह वर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म का 200वाँ वर्ष चल रहा है, यह आर्य समाज के लिए महत्त्वपूर्ण गौरव का क्षण है, इसे हम सभी को मिलकर भव्य एवं विस्तार रूप से मनाते हुए जनता के बीच जाकर महर्षि दयानन्द जी द्वारा किये गये कार्यों को उजागर करते हुए अपनी बात रखनी चाहिए और समाज के

उत्थान के लिए निरन्तर प्रयासरत रहना चाहिए। हम केंद्र सरकार से मांग करते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की स्मृति में देश की राजधानी दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय स्मारक संग्रहालय बनाया जाये जिसमें स्वतंत्रता आन्दोलन एवं राष्ट्र के नव–निर्माण में महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की भूमिका से सम्बन्धित तथ्यपूर्ण सामग्री उपलब्ध की जाये ताकि पूरी दुनिया से आने वाले पर्यटक एवं अन्य लोग महर्षि के कार्यों एवं व्यक्तित्व से परिचित हो सकें। स्वामी आर्यवेश जी ने यह भी मांग की कि भारत की संसद में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र लगाया जाये।

स्वामी आदित्यवेश जी ने केंद्र सरकार से नशाबंदी की राष्ट्रीय नीति बनाकर लागू करने की मांग की। उन्होंने कहा कि नशे ने युवाओं के साथ–साथ पूरे देश को बर्बाद करने का काम किया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने कहा कि आर्य समाज संगठन ने देश के लिए आजादी के साथ–साथ कई आंदोलन लड़े। देश के उत्थान में आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान हमेशा याद किया जायेगा। आर्य समाज संगठन हमेशा से क्रांतिकारी विचारों को लेकर आन्दोलित रहा है और आगे भी समाज के उत्थान के लिए कार्य करता रहेगा।

आर्य समाज को धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध जन–जागरण अभियान को और अधिक तीव्र गति से चलाने की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने वाले युवाओं के नेता स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज हमारे आदर्श थे।

श्री नरेन्द्र नांदल एडवोकेट ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उपकारों को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

आर्य समाज को मिले दो और नए संन्यासी

स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में आर्य समाज के संन्यासियों की उपस्थिति में दो व्यक्तियों को संन्यास की दीक्षा दी गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की। उन्होंने ही दोनों को संस्कार विधि में वर्णित संन्यास दीक्षा विधि के अनुसार संन्यास आश्रम में दीक्षित किया। संन्यास के बाद मोहन मुकुंद बने स्वामी दिव्यानंद तथा सुघड़ सिंह बने स्वामी सत्यानंद। इन दोनों संन्यासियों को स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश, स्वामी वेदप्रकाश, स्वामी ब्रह्मनंद, स्वामी धर्मवेश, स्वामी योगानंद, स्वामी संगीतानन्द, स्वामी सोम्यानंद, स्वामी व्रतानन्द, स्वामी निर्भयानन्द आदि ने आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा की ऋषि दयानन्द के 200वें जन्म जयंती वर्ष के अवसर पर आर्य समाज 200 नये संन्यासी तैयार करने में अग्रसर है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सपनों का भारत बनें – डॉ. अमरजीत शास्त्री

बच्चों को संस्कारित करने में माताओं को अपनी भूमिका निभानी होगी – बहन पूनम आर्या

हमारा मकसद आंकड़े बदलना नहीं बल्कि मानसिकता बदलने का है – बहन प्रवेश आर्या

देश में सैकड़ों युवा निर्माण शिविर लगाये जायेंगे – बिरजानन्द एडवोकेट

युवाओं के निर्माण का कार्य तीव्र गति से होना चाहिए – रामनिवास आर्य

चतुर्वेद महायज्ञ में आर्य परिवारों ने सम्मिलित होकर लिया संकल्प

कार्यक्रम का कुशल संयोजन स्वामी आदित्यवेश जी ने तथा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का कुशल संयोजन बहन प्रवेश आर्या एवं बहन पूनम आर्या ने संभाला

आर्य संन्यासियों एवं वानप्रस्थियों की गरिमामयि उपस्थित ने कार्यक्रम की विशेष शोभा बढ़ाई

पूर्व विधायक चौ. अजीत सिंह जी ने कहा कि वैदिक समाजवाद से ही बनेगा समतामूलक समाज। आर्य समाज इसे आगे बढ़ाने में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रहा है।

आर्य समाज न्यूयॉर्क अमेरिका से पधारे डॉ. अमरजीत शास्त्री ने यज्ञ में आहुति डाली तथा यज्ञ के उपरांत अपने विचार रखते हुए कहा कि प्राचीन वैदिक सिद्धांतो के अनुरूप कार्य करें तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुसार अपना जीवन बनाएं। हमारा लक्ष्य है कि महर्षि के सपनों का भारत बने, जिसमें सभी लोग मिलजुलकर रहें, यहाँ जातिवाद तथा धर्म के नाम पर झगड़े न हों, अमीर–गरीब के बीच की खाई न बढ़े। गरीब, मजदूर तथा किसान का शोषण न हो, धर्म के नाम पर अंधविश्वास न हो, नारी का सम्मान हो, नशे की बुराई को जड़ से खत्म किया जाये, तभी देश की उन्नति होगी।

समाजसेवी श्री जगमोहन मित्तल जी ने कहा कि समाजिक कार्यों के लिए आर्य समाज हमेशा अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। उन्होंने कहा कि ज्यादा से ज्यादा युवाओं को प्राचीन वैदिक संस्कृति से जोड़ने की आवश्यकता है।

बहन पूनम आर्या ने कहा कि आज बच्चों को संस्कारित करने की आवश्यकता है, इस भूमिका में माताओं को अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए।

बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि आज भी छोटी–छोटी बेटियां तिरस्कार का जीवन जी रही हैं। लेकिन हमारा प्रयास उस समय तक जारी रहेगा जब तक लोगों की मानसिकता नहीं बदल जाती। हमारा उद्देश्य आंकड़े बदलने का नहीं, मानसिकता बदलने का है।

श्री बिरजानंद एडवोकेट ने कहा कि इस वर्ष देश में 100 युवा निर्माण शिविरों का आयोजन किया जायेगा। युवा ही देश की रीढ़ होते हैं। इसलिए युवा निर्माण शिविरों के माध्यम से पूरे देश में जागरूकता अभियान चलाया जायेगा।

श्री रामनिवास आर्य जी ने कहा कि युवाओं के निर्माण का कार्य तीव्र गति से चलाने की आवश्यकता है।

पूर्णाहुति के अवसर पर अनेक दम्पत्तियों तथा गणमान्य व्यक्तियों एवं उपस्थित लोगों ने यज्ञ में आहुति

प्रदान की। पूर्णाहुति के बाद बहन कल्याणी आर्या जी के सुन्दर भजनों का आनन्द उपस्थित जनसमूह ने उठाया तथा उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की।

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी ने भी समस्त यजमान परिवारों को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए उनके जीवन की मंगल कामना की।

यज्ञ के दौरान राष्ट्रवादी विचार मंच के अध्यक्ष श्री राजदेव नैष्टिक, श्री वेद प्रकाश आर्य मंत्री गुरुकुल सिंहपुरा, महिला विश्वविद्यालय खानपुर की पूर्व रजिस्ट्रार डॉ. कविता शर्मा आदि ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कांग्रेस नेता तथा हिसार लोकसभा प्रभारी श्री चक्रवर्ती शर्मा ने कहा कि जब तक लोग अपनी मानसिकता नहीं बदलेंगे, समाज भी नहीं बदल सकता है। अच्छे समाज की नींव अच्छी मानसिकता पर ही टिकी हुई है।

कार्यक्रम में प्रतिदिन आर्य समाज के विद्वान, उपदेशक, नेता तथा संन्यासीगण शामिल होते रहे तथा उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते रहे।

ऋषि दयानन्द के 200वें जन्म जयंती वर्ष के अवसर पर आयोजित 17वें बेटी बचाओ महायज्ञ में अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी अंतिम कुंडू को विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ से स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश, स्वामी वेद प्रकाश, आचार्य वेदमित्र, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, अजय पाल कुंडू ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम के अन्त में ऋषि दयानन्द के 200वें जन्मदिन पर आर्य संन्यासियों तथा आर्य परिवारों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री अजयपाल, प्रदीप कुमार, सज्जन राठी, ऋषिराज शास्त्री, ईश्वर सिंह, हरिकेश रावेश, राजबीर वशिष्ठ, राजकुमारी आर्या, मुकेश आर्या, एकता आर्या, अंजलि आर्या, सुषमा आर्या, सुमित्रा आर्या आदि का विशेष सहयोग रहा। यज्ञ के मुख्य यजमान के रूप में श्री हरिकेश रावेश एडवोकेट एवं उनकी धर्मपत्नी पूज्या माता चन्द्रसुखी आर्या जी ने यज्ञ में निरन्तर दोनों समय उपस्थित रहकर विशेष तपस्या की।

स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, रोहतक में आयोजित 17वें बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की चित्रमय झलकियाँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर बंगाल की सभी आर्य समाजों के सहयोग से कोलकाता में भव्य समारोह का आयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी नव–जागरण के पुरोधा थे – स्वामी आर्यवेश

विलक्षण प्रतिभा के धनी थे स्वामी दयानन्द सरस्वती – डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

वेद में सभी समस्याओं का समाधान है – डॉ. महावीर अग्रवाल

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर बंगाल की समस्त आर्य समाजों के सहयोग से कोलकाता में दिनांक 8, 9 व 10 मार्च, 2024 को भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसमें पश्चिम बंगाल की विभिन्न आर्य समाजों से भारी संख्या में हजारों आर्यजन सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम का गुरुतर भार आर्य समाज कोलकाता, आर्य समाज बड़ा बाजार एवं आर्य समाज हावड़ा की संयुक्त समिति ने उठाया। इस समारोह में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में

प्रामाणिक जानकारी देने वाले विख्यात विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पतंजलि विश्वविद्यालय के प्रति–कुलपति डॉ. महावीर अग्रवाल, मलरना चौर गुरुकुल के संचालक युवा वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव आर्य, युवा संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी आदि विद्वानों के अतिरिक्त आर्य जगत् की विदुषी उपदेशिका बहन अंजलि आर्या भी समारोह में सम्मिलित हुई। इस आयोजन के स्वागताध्यक्ष प्रसिद्ध दानवीर सेठ दीनदयाल गुप्त, समिति के अध्यक्ष श्री आनन्ददेव आर्य, समिति के मन्त्री श्री दीपक आर्य, समिति के कोषाध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार आर्य थे। उनके अतिरिक्त सभी समाजों के पदाधिकारी समिति में सदस्य के रूप में मनोनीत किये गये थे और उन्हें अलग–अलग जिम्मेदारियाँ सौंपी गई थी। कार्यक्रम में स्थानीय विद्वान् सर्वश्री योगेशराज उपाध्याय, वेद प्रकाश शास्त्री, मधुसूदन शास्त्री, अर्चना शास्त्री आदि का भी विशेष योगदान रहा। तीनों दिन तक सभी विद्वानों के अलग–अलग विषयों पर सारगर्भित व्याख्यान चलते रहे और आर्य जनता पूरे उत्साह के साथ कार्यक्रम में सम्मिलित रही।

मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली व श्रीमती साध्वी लक्ष्मी देवी धर्मार्थ ट्रस्ट नौल्था, पानीपत द्वारा छात्रवृत्ति वितरण व अभिनन्दन समारोह एवं यज्ञ का आयोजन

दिनांक 17 मार्च, 2024 को मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली व श्रीमती साध्वी लक्ष्मी देवी धर्मार्थ ट्रस्ट नौल्था पानीपत के सयुंक्त तत्वावधान में छात्रवृत्ति वितरण व अभिनंदन समारोह एवं यज्ञ का आयोजन लक्ष्मी देवी समाधि स्थल नौल्था, पानीपत में सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल 9 बजे मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। अध्यापिका प्रीति आर्या के नेतृत्व में वैदिक कन्या गुरुकुल एचराकलां, सोनीपत व डॉ. राजबाला जी आर्या के सानिध्य में आर्य कन्या गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय मोर माजरा करनाल की ब्रह्मचारिणियों ने वेद की ऋचाओं का सुमधुर स्वर से पाठ किया। यह यज्ञ हर वर्ष श्रीमती साध्वी लक्ष्मी देवी व श्री जयभगवान जागलान जी की स्मृति में परिवार द्वारा आयोजित किया जाता है। परिवारजनों के अतिरिक्त आस–पास के गांवों व अन्य अनेक स्थानों से सैकड़ों माताओं, बहनों व भाइयों ने यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान कर श्रीमान जयभगवान जागलान जी व श्रीमती लक्ष्मी देवी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

यज्ञ के पश्चात् श्री रामपाल शास्त्री जी के संयोजन में श्रद्धांजलि व छात्रवृत्ति वितरण एवं सम्मान समारोह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। वैदिक कन्या गुरुकुल एचरा कलां, सोनीपत तथा आर्य कन्या गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय मोर माजरा की छात्राओं द्वारा सुमधुर भजन प्रस्तुत किये गये।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सोमदेव जी शास्त्री, उपप्रधान श्री हरवीर सिंह शास्त्री सदस्य डॉ. अजय कुमार शास्त्री एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी धर्मार्थ ट्रस्ट नौल्था के प्रधान श्री हरवीर सिंह जागलान के द्वारा गोशालाओं, गुरूकुलों व विद्यालयों की छात्राओं को एक लाख रुपए से अधिक की सहयोग राशि दान, छात्रवृत्ति व प्रतिभा पुरस्कार के रूप मे वितरित की गई। मानव सेवा प्रतिष्ठान ने श्री जयभगवान जागलान जी की स्मृति में आर्य कन्या गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय मोर माजरा करनाल के यशस्वी प्रधान श्री जसवीर सिंह मान एडवोकेट को शॉल, सम्मान पत्र व सम्मान राशि देकर अभिनन्दित किया।

इस अवसर पर डॉ. राजबाला जी आर्या, श्री जसवीर सिंह मान आर्य कन्या गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय मोर माजरा करनाल पूर्व प्रिंसिपल हरवीर सिंह शास्त्री, उपप्रधान मानव सेवा प्रतिष्ठान, श्री रामसिंह जागलान इसराणा आदि अनेक गणमान्यों ने अपने–अपने विचार रखते हुए श्री जागलान जी के साथ अपने अनुभवों को साझा किया तथा अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को सुशोभित किया। श्रीमान हरवीर सिंह जागलान ने सभी आगन्तुक महानुभावों का अभिनंदन व धन्यवाद किया। परिवार द्वारा सभी के लिए प्रसाद व भोजन की सुव्यवस्था की गई थी।

– डॉ अजय कुमार शास्त्री, सदस्य मानव सेवा प्रतिष्ठान

आश्रम व्यवस्था आर्यों के लिए प्रकाश स्तम्भ है

मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सके इसके लिए उसे योजना बद्ध अपने जीवन को जीना होता है और योजना का प्रारूप हमारे ऋषियों ने दे दिया था, जिसका अनुमोदन न केवल ऋषि दयानन्द ने किया है, अपितु अपने ग्रन्थों में वह योजना–बद्ध प्रारूप भी दिया है। और वह योजना–बद्ध प्रारुप है आश्रम व्यवस्था। यह एक ऐसी योजना है जो मनुष्य को अपने जीवन को न केवल व्यवस्थित करके उच्चतम योग्यता की ओर बढ़ने का अवसर प्रदान करती है अपितु सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए मनुष्य अपने परम लक्ष्य अर्थात् मोक्ष तक की भी प्राप्ति कर सकता है।

हमारे ऋषियों द्वारा यह एक ऐसा तन्त्र विकसित किया गया है जो संसार भर में आज तक कोई भी दार्शनिक नहीं दे पाया। संसार भर में आज जिन दार्शनिकों को महान माना जाता है, चाहे वे यूनानी रहे हों, रोमवासी रहे हों या आज के आधुनिक युग के विचारक रहे हों, वे न तो जीवन की कोई इस प्रकार की योजना दे पाते हैं और न ही इसका कोई विकल्प दे पाने में सक्षम हैं। वास्तव में आश्रम व्यवस्था मनुष्य को सम्पूर्णता से जीने का एक मौका देती है, जिसमें व्यक्ति अपने प्रत्येक कर्त्तव्य को पूरा कर पाने में तो सफल होता ही है अपितु उसे अपने जीवन में कभी पश्चाताप का अनुभव भी नहीं होने पाता है क्योंकि प्रत्येक आश्रम में उसकी योग्यता बढ़ती चली जाती है। व्यक्ति अपने जीवन में सम्पूर्णता का अनुभव करता है वह इस व्यवस्था के अनुसार जीवन जीने पर न केवल व्यक्तिगत कर्त्तव्यों को पूरा कर पाता है अपितु पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कर्त्तव्यों को भी पूरा कर पाने में सक्षम हो जाता है।

वैदिक व्यवस्थाओं के अर्न्तगत हमारे ऋषियों ने व्यक्ति के जीवन को चार भागों में बाटा है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। व्यक्ति के जीवन का प्रथम चरण ब्रह्मचर्य आश्रम है। जिसमें उसका मुख्य कार्य विद्या को प्राप्त करना है क्योंकि बिना विद्या के योग्यता प्राप्त नहीं होती और योग्यता के बिना कर्त्तव्यों का पालन नहीं किया जा सकता । अतः जीवन का प्रारम्भिक काल अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्या प्राप्त करना ही लक्ष्य निर्धारित किया गया है क्योंकि विद्या जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है इसलिए उसे जीवन के प्रारम्भ में ही प्राप्त करना लिखा है और वह भी गुरुकुलीय शिक्षा, जिससे अगले आश्रम अर्थात गृहस्थ में प्रवेश करने की योग्यता अर्जित कर सके और गृहस्थ जीवन में सफल हो सके। आज भी विद्यार्थी काल में ही अच्छी योग्यता प्राप्त करके, समर्थ बनकर जब गृहस्थ बनता है, तभी गृहस्थ जीवन में सफल होता है। अतः विद्यार्थी काल में विद्या प्राप्ति की आज भी उतनी ही प्रासंगिकता है जितना ऋषियों के द्वारा उसे निर्धारित किया गया था।

एक आश्रम का जीवन अगले आश्रम का आधार बनता है, अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम की योग्यता गृहस्थ जीवन का आधार बनती है। इसीलिए ऋषि दयानन्द वेद मन्त्र के माध्यम से समझाते है कि जो ब्रह्मचर्य धारण, विद्या, उत्तम शिक्षा का ग्रहण किये बिना अथवा बाल्यावस्था में विवाह करते हैं, वे स्त्री पुरुष नष्ट भ्रष्ट होकर विद्वानों में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होते। गृहाश्रम के कर्त्तव्यों को दर्शाते हुए ऋषि लिखते हैं– जो ऐहिक और पारलौलिक सुख प्राप्ति के लिए विवाह करके अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना है, और नियत काल में यथा विधि ईश्वरोपासना और गृहकृत्य करना और सत्य धर्म में ही अपना तन– मन–धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तानों की उत्पति करना।

अतः गृहस्थ में मनुष्य द्वारा उस विद्या का उपयोग जो उसने ब्रह्मचर्य काल में ग्रहण की थी, इस प्रकार करना होता है कि परोपकार हो, पारलौकिक सुख अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वरोपासना हो, सत्य के प्रचार–प्रसार के लिए अपना सामर्थ्य लगाना व योग्य सन्तति का निर्माण हो। गृहस्थ आश्रम ही अन्य आश्रमों के व्यक्ति को स्थिर होने का अवसर प्रदान करता है, गृहस्थ के सहारे ही अन्य आश्रम टिके हुए हैं। गृहस्थ के संसाधनों से ही ब्रह्मचारियों का पोषण होता है और संन्यासियों को परोपकार का अवसर मिलता है लेकिन गृहस्थ का यह कर्त्तव्य है क्योंकि वह भी ब्रह्मचारी रहकर अन्य गृहस्थ से उपकार प्राप्त कर चुका होता है, इसीलिए उनकी सेवा के द्वारा वह कर्त्तव्य का पालन करता है और अन्य आश्रमियों को सहारा न देकर कृतघ्नता करता है।

यह आश्रम व्यवस्था इस प्रकार बनाई गई है और इसमें इस प्रकार कार्यों का निर्धारण किया है कि एक आश्रम उससे अगले आश्रम का आधार बनता है, जिस प्रकार ब्रह्मचर्य आश्रम में अच्छी विद्या प्राप्त करके ही सुखी गृहस्थ जीवन प्राप्त किया जा सकता है, इसी प्रकार गृहस्थ काल में परिश्रम करके अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए सभी संसाधनों से सम्पन्न होता है, जब वानप्रस्थ की आयु आती है तो अपने वानप्रस्थ के कर्त्तव्यों का निर्वाह कर सकता है अर्थात् गृहस्थ वानप्रस्थ आश्रम का आधार है। वानप्रस्थ एक और अर्थ में भी महत्वपूर्ण है कि यह संन्यास में जाने की तैयारी का भी काल है, यदि व्यक्ति वानप्रस्थ में पुनः अपनी विद्या को बढ़ाकर समाज व राष्ट्र के हितकारी कार्यों को पूर्ण रूप से प्रारम्भ नहीं करता है तो आगे न तो संन्यास की योग्यता बन पाती है और न ही सर्वकल्याण की भावना विकसित हो पाती है। वानप्रस्थ का होना अत्यन्त आवश्यक है, समाज को संभालने के लिए भी और अपने परम लक्ष्य मोक्ष की ओर अग्रसर होने के लिए भी। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि अन्य आश्रमों में जहाँ विकार उत्पन्न हो गए हैं वही वानप्रस्थ का तो मानो लोप ही हो गया है। आज व्यक्ति वर्तमान जीविका के लिए विद्या भी प्राप्त कर लेते है, गृहस्थ में धन आदि भी अर्जित कर लेते हैं, लेकिन उसके बाद जीवन उसी में बिता देते है। वानप्रस्थ के महत्व को समझते ही नहीं या यह समझना चाहिए कि वानप्रस्थ क्या होता है यही नहीं पता है, अपितु सोचते हैं कि वानप्रस्थ की वर्तमान में कोई आवश्यकता ही नहीं है। और जहाँ शास्त्रोक्त सिद्धान्तों को पुनः धारण कर आगे बढ़ने का प्रयास किया जाना चाहिए वहाँ केवल अनुभव को ही सब कुछ मान लेते हैं। ऐसी स्थिति में जब वानप्रस्थ की व्यवस्थाएं ही समाप्त कर दी गई तो फिर संन्यास आश्रम तक पहुँचे कौन? और बिना आधार के यदि संन्यास धारण कर भी लिया तो फिर संन्यास की मर्यादा ही नहीं रहती है और वह बन जाता है केवल पलायनवाद या गेरुए वस्त्रों के प्रति सामान्य जन में सम्मान के भाव का दुरूपयोग मात्र। क्योंकि योग्यता के बाद ही संन्यास का महत्व होता है और तभी संन्यासी अपने कर्त्तव्यों का पालन कर पाने समर्थ होता है। जहां अन्य आश्रमी सभी बन सकते हैं, संन्यास के लिए तो ऋषियों ने सीधी–सीधी योग्यता निर्धारित की है। इसीलिए ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि सन्यास में दृढ़ वैराग्य और यथार्थ ज्ञान का होना ही मुख्य कारण है। ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास लेने के लिए भी ऋषि द्वारा वैराग्य और विद्या को ही आधार बनाते हुए लिखा है– यदि पूर्ण अखण्डित ब्रह्मचर्य, सच्चा वैराग्य और पूर्ण ज्ञान–विज्ञान को प्राप्त होकर ब्रह्मचर्याश्रम को पूर्ण कर ही के संन्यासाश्रम को ग्रहण कर लेवे।

जीवन जीने की ऐसी सुन्दर योजना जो वेद पर आधारित है हमारे राष्ट्र में जब तक धारण की जाती रही तब तक मानव मात्र ही नहीं प्राणी मात्र तक सुख का जीवन जीते रहे हैं, लेकिन अन्य वैदिक सिद्वान्तों के साथ–साथ इसमें भी ऐसा विकार उत्पन्न हो गया कि ब्रह्मचर्य आश्रम मात्र जीविकोपार्जन के लिए कौशल जुटाना रह गया, चाहे वह सभी नैतिकताओं की तोड़कर हो। गृहस्थ मात्र शारीरिक सुख के साधनों के एकत्रीकरण के लिए रह गया और वानप्रस्थ तो रहा ही नहीं व कहीं–कहीं संन्यास की परम्पराए रही तो मात्र पलायनवादी लोगों की शरण स्थली बन गया या कहीं विद्वान लोगों ने संन्यास लिया भी तो वे भी सर्वोपकार की अपेक्षा अपने–अपने मठों व आश्रमों के पोषण में ही लगे रहे।

इन्हीं परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने अन्य वैदिक सिद्धान्तों की तरह आश्रम व्यवस्था के प्रतिस्थापित करने के लिए बल दिया है। आज राष्ट्रोत्थान के लिए दृढ़ आश्रमियों की आवश्यकता है अर्थात् जो अपने–अपने आश्रम में दृढ़ होकर राष्ट्र निर्माण में लग सकें। ऋषि दयानन्द ने स्वयं भी संन्यास परम्परा का दृढ़ता से पालन किया है। जहाँ उनके काल में संन्यासी मठों आदि के निर्माण में लगे रहे वहीं ऋषि ने अपना जीवन सर्वोपकारक सिद्धान्तों को जन–जन में पहुँचने के लिए लगा दिया। आश्रम व्यवस्था को अपनाए बिना राष्ट्र कल्याण सम्भव नहीं है। बालकों को उत्तम शिक्षा की आवश्यकता है, जिसमें वे सहयोग व उन्नति के लिए प्रयास करें न कि मात्र दूसरों के शोषण के माध्यम से अपनी ही उन्नति में लगे रहें। गृहस्थों के लिए आवश्यक है कि अपने धन का उपयोग, अपने सामर्थ्य का उपयोग और अपने कौशल का उपयोग राष्ट्र निर्माण के लिए करें न कि मात्र अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए, वहीं गृहस्थ को वानप्रस्थ की आयु प्राप्त होने पर परिवार के कार्यों को युवापीढ़ी को सौंप कर राष्ट्र–निर्माण में लगें, लेकिन दुभार्ग्य यह है कि आज सबसे अधिक इसी की कमी है कि हमारे गृहस्थ न तो परिवार का मोह छोड़ते हैं और न ही परिवार छोड़कर समाज व राष्ट्रोत्थान में लगते हैं। और संन्यास का उत्थान तभी सम्भव होगा जब ये तीनों आश्रम व्यवस्थित हो जाएं।

आर्यो! आश्रम व्यवस्था आर्यों के लिए प्रकाश स्तम्भ है। आर्यों के उत्थान के लिए इसका पालन आवश्यक है। हमें यदि राष्ट्र निर्माण का कार्य तीव्रता से बढ़ाना है तो अपने इन कर्त्तव्यों का पालन करना ही होगा, तभी ऋषि दयानन्द की अकांक्षा को हम पूरा कर पाने में सक्षम होंगे।

आर्य समाज आहुलाना, तहसील–गोहाना, जिला–सोनीपत का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ

स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी भी उत्सव में सम्मिलित हुए

आर्य समाज आहुलाना, तहसील–गोहाना, जिला–सोनीपत का वार्षिकोत्सव गत् 15, 16 व 17 मार्च, 2024 को बड़े धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। उत्सव में आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी चेतनदेव जी (अलीगढ़), स्वामी कृष्णानन्द जी आदि संन्यासियों के अतिरिक्त ब्लॉक पंचायत समिति की अध्यक्ष श्रीमती साक्षी मलिक, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका बहन कल्याणी आर्या व तन्नू आर्या आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुई। इस तीन दिवसीय उत्सव में प्रातः स्वामी चेतनदेव जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम चलता रहा तथा मध्यान्ह एवं रात्रि को व्याख्यान एवं भजनों का कार्यक्रम चला। ग्रामवासियों ने बड़े उत्साह के साथ उत्सव में भाग लिया।

17 मार्च, 2024 को रात्रिकालीन सभा में स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी भी उत्सव में पहुंचे और अपने ओजस्वी विचारों से श्रोताओं को वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराया।

अपने व्याख्यान में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का समाज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वामी दयानन्द जी ने स्त्री शिक्षा, अक्षूतोद्धार एवं समाज में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए अपना जीवन समर्पित किया। महर्षि ने देश की स्वतंत्रता के लिए अनेक क्रांतिकारियों को प्रेरणा दी। उन्होंने सर्वप्रथम स्वराज्य का नारा दिया और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाया। स्वामी जी ने हरिद्वार के कुम्भ मेले में पाखण्ड–खण्डिनी पताका फहराकर समस्त अवैदिक मान्यताओं को चुनौती दी। वे महान् समाज सुधारक एवं क्रान्तदर्शी संन्यासी थे।

स्वामी आदित्यवेश जी ने आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी की स्वतंत्रता आन्दोलन में भूमिका पर प्रकाश डाला और अपने ओजस्वी व्याख्यान से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

बहन कल्याणी आर्या ने भी महर्षि दयानन्द जी की महिमा में भजन गाकर उपस्थित जनसमूह को अत्यन्त प्रभावित किया।

इस अवसर पर स्मृति चिन्ह देकर समस्त यजमान परिवारों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की सफलता के लिए आर्य समाज के प्रधान एवं बारह खॉप के अध्यक्ष श्री मलिकराज मलिक, श्री विजयपाल आर्य, श्री विजयपाल श्योराण, श्री सत्यवीर सिंह, श्री पवन आर्य आदि ने अथक परिश्रम किया। उत्सव सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

महेन्द्रगढ़ जिले की समस्त आर्य समाजों के संयुक्त प्रयास से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर प्रकाशित स्मारिका के लोकार्पण के लिए 6 मार्च, 2024 को यादव सभा नारनौल में भव्य कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

आर्य जगत् यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी रहे समारोह के मुख्य अतिथि

महेन्द्रगढ़ जिले की समस्त आर्य समाजों के संयुक्त प्रयास से गत् 6 मार्च, 2024 को यादव सभा नारनौल में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर प्रकाशित स्मारिका के लोकार्पण समारोह का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्मारिका का लोकार्पण, समारोह के मुख्यअतिथि स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सैकड़ों सामाजिक कार्यकर्ताओं को स्मृति चिन्ह, स्मारिका एवं शॉल भेंट करके सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सुमेर सिंह यादव ने बड़ी कुशलता के साथ किया और कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य डॉ. आर. एन. यादव जी ने की। पूरे कार्यक्रम के सूत्रधार एवं संरक्षक श्री रामनिवास आर्य (धोलेड़ा) रहे। कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। कार्यक्रम को डॉ. कृष्णा यादव, श्री रामनिवास आर्य, श्री बिरजानन्द आदि ने सम्बोधित किया। प्रातःकाल यज्ञ का ब्रह्मत्व कैप्टन जगराम आर्य ने संभाला और बड़ी कुशलता से यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय नन्दराम वैद्य, श्री सत्यवीर आर्य (दताल), श्री विजयपाल आर्य, श्री कंवर सिंह आर्य, श्री राम अवतार पुरुषार्थी आदि के भी भजनों का सुन्दर कार्यक्रम रहा।

मुख्य वक्ता और मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में पधारे स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व एवं कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती इस युग के महान् क्रांतिकारी संन्यासी थे। पांच हजार के बाद वह पहले संन्यासी थे जिन्होंने वेदों की ओर लौटो का आह्वान किया। महर्षि दयानन्द की प्रतिभा विलक्षण थी। उन्होंने अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध अनेक शास्त्रार्थ किये और विरोधियों को पछाड़ा। महर्षि दयानन्द जी जिधर भी गये वहीं अपनी अमिट छाप छोड़कर आये। उन्होंने वेद के प्रचार–प्रसार के लिए आर्य समाज की स्थापना की और भव्य कार्यक्रम सौंपा। जन्मना जाति प्रथा, छूआछूत, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड, बाल विवाह, सती प्रथा एवं समाज की अन्य कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाया। महर्षि दयानन्द जी निःसंदेह एक युग पुरुष थे। उनकी 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर सभी आर्यजनों को संकल्प लेना चाहिए कि उनके द्वारा बताये गये रास्ते पर चलकर समाज में नई जागृति पैदा करेंगे।

कार्यक्रम में डॉ. आर.एन. यादव, श्री रामनिवास आर्य, डॉ. सुमेर सिंह यादव, डॉ. कृष्णा यादव, श्री सत्यदेव आर्य, श्री राम सिंह मधुर, स्वामी हंसानन्द, डॉ. चतर सिंह आर्य, श्री सुरेशचन्द्र सैनी, डॉ. वीरेन्द्र यादव प्रिंसिपल, डी.ए.वी. स्कूल नारनौल, श्री रामानन्द आर्य (लक्षीवास बहरोड़) आदि अनेक गणमान्य लोग सम्मिलित थे। स्मारिका का लोकार्पण करने के बार स्मारिका सभी को वितरित की गई। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

आर्य समाज थापरनगर, मेरठ में ऋषि जन्म एवं बोधोत्सव का कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

वीतराग संन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी का मिला आशीर्वाद

आर्य जगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयि उपस्थिति

आर्य समाज थापरनगर, मेरठ के तत्वावधान में 5 से 8 मार्च, 2024 तक ऋषि जन्म एवं बोधोत्सव का कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान प्रातःकाल विद्यालयों एवं ग्रामीण क्षेत्र में तथा सायंकाल आर्य समाज थापरनगर, मेरठ में यज्ञ भजन एवं प्रवचनों के माध्यम से जन सामान्य में महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा प्रचारित–प्रसारित की गई। इस चार दिवसीय कार्यक्रम के समापन अवसर पर जहाँ वीतराग संन्यासी विवेकानन्द जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त हुआ

वहीं आर्य जगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, प्रसिद्ध दानवीर नेता ठा. विक्रम सिंह जी, युवा संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी, विदुषी बहन डॉ. अर्चना प्रिय आर्या जी एवं युवा भजनोपदेशक श्री अजय आर्य आदि विशेष रूप से सम्मिलित रहे। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज थापरनगर, मेरठ के प्रधान श्री राजेश सेठी जी ने किया तथा व्यवस्था का दायित्व समाज के मंत्री श्री मनीष शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री भानू बत्रा, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना कैलाश सोनी, मंत्राणि प्रीति सेठी एवं कोषाध्यक्ष शोभा मलिक आदि ने बड़ी निष्ठा के साथ संभाला। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्याधाम का शताब्दी शुभारम्भ समारोह

29 फरवरी एवं 1 से 3 मार्च, 2024 को धूमधाम के साथ मनाया गया

समारोह का उद्घाटन आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने किया

समारोह का मुख्य संयोजन प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. दीनानाथ शास्त्री ने किया

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्याधाम के शताब्दी समारोह में पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज (ऋषिकेश), श्री आनन्द कुमार आर्य (टाण्डा), श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पं. विद्याप्रसाद मिश्र (दिल्ली), डॉ. सत्यकेतु शास्त्री (लखनऊ), आचार्य चन्द्रमित्र पूर्व स्नातक (गुरुकुल अयोध्या), आदि के अतिरिक्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ, श्री विनोद दधीचि, पं. अनूप मित्र, महंत गिरीश पति त्रिपाठी महापौर अयोध्या आदि की गरिमामयि उपस्थिति रही। चार दिन तक चले इस समारोह में नारी शक्ति वन्दन सम्मेलन, वैदिक सिद्धानन्द एवं रामराज्य सम्मेलन, वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आदि महत्त्वपूर्ण सत्र आयोजित किये गये। प्रातःकाल यज्ञ 8 से 10 बजे तक यज्ञ एवं उपदेश तथा सायं 3 से 5 बजे एवं रात्रि 7 से 10 बजे तक सम्मेलनों के कार्यक्रम चले। 29 फरवरी को अपरान्ह 2.30 बजे महंत गिरीश पति त्रिपाठी, स्वामी आर्यवेश जी, श्री आनन्द कुमार आर्य जी एवं श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी के सान्निध्य में ध्वजारोहण हुआ। इस समारोह के आयोजन में गुरुकुल प्रबन्ध समिति अयोध्याधाम के अध्यक्ष श्री अवधेश दास जी, कुलपति विनय कुमार मनीषा, प्रबन्धक श्री रामकुमार दास, मंत्री भानु प्रताप सिंह, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश कुमार गुप्त, उपप्रबन्धक श्री महेशचन्द्र तिवारी, उपाध्यक्ष श्री अंजनी कुमार गर्ग, उपमंत्री दानबहादुर सिंह, पुस्तकाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश मिश्र, मुख्य संरक्षक सर्वादीन तिवारी, प्राचार्य उमा दयाल शास्त्री, कार्यालय प्रभारी देवव्रत मिश्र एवं श्री अरुण मित्र शास्त्री तथा पूर्व कार्यक्रम के संयोजक पं. दीनानाथ शास्त्री ने अथक परिश्रम करके समारोह को सफल बनाया। आर्य शौर्य प्रशिक्षक श्री हरिसिंह जी आर्य दिल्ली से पधारे तथा ब्रह्मचारियों को व्यायाम प्रदर्शन के लिए प्रशिक्षित किया। अगले शताब्दी समारोह की भव्य तैयारी एवं सफलता के संकल्प के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य महाविद्यालय किरठल, बागपत का 100वां वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

आर्य महाविद्यालय किरठल, बागपत का 100वां वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक 22 से 24 फरवरी, 2024 को हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। समारोह में आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त स्वामी आदित्यवेश जी, डॉ. यशपाल सिंह, प्रधानाचार्य जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत, आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री सहारनपुर, डॉ. वाचस्पति मिश्र मेरठ आदि विद्वान् भी समारोह में सम्मिलित हुए। पं. कुलदीप आर्य बिजनौर एवं सुकीर्ति आर्या खतौली की भजन मण्डली ने भजनों के द्वारा वेदोपदेश दिया।

इस अवसर पर अनेक राजनेता एवं क्षेत्र के गणमान्य लोग समारोह में सम्मिलित हुए। इस समारोह के अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से तीरंदाजी अकादमी का उद्घाटन भी किया गया।

इस आयोजन का दायित्व डॉ. सचिन राणा अध्यक्ष, श्री ओमपाल सिंह शास्त्री प्रबन्धक, श्री यशपाल सिंह कोषाध्यक्ष एवं प्राचार्य आचार्य ब्रह्मदत्त जी ने अपने अन्य सभी सहयोगियों के साथ निष्ठा पूर्वक संभाला।

गुरुकुल देव ऋषि मेरठ

चौधरी चरण सिंह कांवड़ मार्ग, गंगनहर, निकट नानू ब्रिज सरधना, मेरठ का उद्घाटन समारोह शनिवार 24 फरवरी, 2024 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आचार्य बालकृष्ण जी महाराज रहे समारोह के मुख्य अतिथि

आर्य जगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी महाराज की रही अध्यक्षता

पूर्व राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी विशिष्ट के रूप में पधारे

यज्ञ के ब्रह्मा पद को आचार्या डॉ. सुमेधा जी ने किया सुशोभित

आर्य जगत की विदुषी उपदेशिका बहन अंजलि आर्या ने किया कुशल मंच संचालन

गुरुकुल देव ऋषि मेरठ (लड़कों के लिए आवासीय विद्यालय) का उद्घाटन समारोह 24 फरवरी, 2024 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज अध्यक्ष पतंजलि योगपीठ हरिद्वार रहे तथा विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के पूर्व राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे, समारोह की अध्यक्षता आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी महाराज ने की तथा यज्ञ के ब्रह्मा पद को कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्या डॉ. सुमेधा जी ने सुशोभित किया।

इस अवसर पर श्री विनोद वैश्य आई.ए.एस. पूर्व सचिव दूरसंचार विभाग भारत सरकार, डॉ. ओमपाल सिंह पूर्व प्रधानाचार्य राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित, डॉ. राजीव चौधरी कुलसविच आगरा विश्वविद्यालय, डॉ. राजकुमार सांगवान वरिष्ठ समाजसेवी, चौ. बद्री विशाल उप–महाप्रबन्धक पंजाब नेशनल बैंक मेरठ, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गायक श्री कुलदीप आर्य, चौ. अमन सिंह आदि महानुभावों की गरिमामयि उपस्थिति रही।

इस उद्घाटन समारोह में देव ऋषि शिक्षा जनकल्याण समिति, मेरठ के समस्त पदाधिकारियों ने आगन्तुक महानुभावों के आतिथ्य में कोई कसर नहीं छोड़ी। सर्वश्री कृष्णपाल सिंह आर्य, प्रो. वीरेन्द्र, बहन अंजलि आर्या एवं अन्य सभी पदाधिकारी व्यवस्था में मनोयोग से जुटे हुए थे। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस शिक्षण संस्थान में जहां आधुनिक विषयों की पढ़ाई की समुचित व्यवस्था होगी वहीं बच्चों के संस्कार एवं नैतिक शिक्षा के लिए भी योग्य प्रशिक्षकों की व्यवस्था की जायेगी। गंग नहर के किनारे प्राकृतिक वातावरण में बने इस देव ऋषि गुरुकुल का उद्घाटन बहुत बड़े उद्देश्य के साथ किया गया है। जो लोग अपने बच्चों को शिक्षित एवं संस्कारित करवाते हुए समाज में उच्चकोटि के विद्वान्, खिलाड़ी एवं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ बनाना चाहते हैं, वे अपने बच्चों को इस संस्थान में प्रवेश दिलाकर लाभ उठा सकते हैं।

ठा. विक्रम सिंह वैदिक फार्म हाउस सलावा झाल, मेरठ में क्रियात्मक योग साधना शिविर एवं वानप्रस्थ संन्यास दीक्षा समारोह 18 से 24 फरवरी, 2024 तक हुआ आयोजित

स्वामी आर्यवेश जी समापन सत्र में मुख्यअतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

गत् 18 से 24 फरवरी, 2024 तक ठा. विक्रम सिंह वैदिक फार्म हाउस सलावा झाल, मेरठ में क्रियात्मक योग साधना प्रशिक्षण शिविर एवं वानप्रस्थ संन्यास दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया जिसके संयोजक डॉ. कपिल आचार्य महामंत्री आर्य वीरदल पश्चिमी उत्तर प्रदेश थे। प्रशिक्षण के लिए योग साधना के अनुभवी प्रशिक्षक वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रेश जी गांधीधाम गुजरात एवं ब्र. अरुण आर्यवीर मुम्बई पधारे।

इस शिविर का समापन 24 फरवरी, 2024 को प्रातः यज्ञ के उपरान्त हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी एवं युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त आर्य जगत् के प्रसिद्ध दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी, राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष डॉ. आनन्द कुमार आई.पी.एस. एवं अन्य गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे।

ठा. विक्रम सिंह जी ने गंग नहर के किनारे पर यह वैदिक फार्म साधना, स्वाध्याय एवं तपस्या करने वाले वैदिक विद्वानों के लिए तैयार किया है। जहां इस प्रकार के शिविर निरन्तर आयोजित किये जायेंगे। ठा. विक्रम सिंह जी ने स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी का शॉल भेंटकर हार्दिक स्वागत किया और कहा कि आप यहां पर नियमित रूप से आते रहें और यहां के लोगों को वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहें। इस केन्द्र के दरवाजे 24 घण्टे आपके लिए खुले रहेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी ने भी अपना संक्षिप्त सारगर्भित प्रवचन प्रस्तुत किया और ठा. विक्रम सिंह तथा डॉ. कपिल आचार्य का धन्यवाद ज्ञापित किया।

ज्ञान ज्योति पर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की द्वितीय जन्म शताब्दी एवं बोधोत्सव आर्य समाज हापुड़ में दिनांक 3 मार्च से 8 मार्च, 2024 तक मनाया गया

स्वामी आर्यवेश जी एवं श्री देवेन्द्रपाल वर्मा 5 मार्च, 2024 को ऋषि जन्मोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे

ज्ञान ज्योति पर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की द्वितीय जन्म शताब्दी एवं बोधोत्सव समारोह दिनांक 3 से 8 मार्च, 2024 की तिथियों आर्य समाज हापुड़, उत्तर प्रदेश में भव्यता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 29 फरवरी से 2 मार्च, 2024 तक प्रतिदिन सायं 4 बजे ज्ञान ज्योति संदेश यात्रा, यज्ञ फेरी के रूप में आर्य समाज मंदिर से प्रारम्भ होकर नगर के विभिन्न मोहल्लों और कॉलोनियों में निकाली गई।

5 मार्च, 2024 को महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव सायं 4 से 7 बजे तक आर्य समाज के प्रांगण में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी आर्यवेश जी एवं श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम का संयोजन श्री आनन्द प्रकाश आर्य ने किया। 6 मार्च, 2024 को सायं 4 से 5 बजे तक आर्य मुसाफिर पं. लेखराम बलिदान दिवस मनाया गया तथा 8 मार्च को सायं 4 से 7 बजे तक ऋषि बोधोत्सव–भारत भाग्योदय दिवस मनाया गया। यह कार्यक्रम आर्य उपप्रतिनिधि सभा हापुड़ एवं आर्य समाज हापुड़, उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। श्री पवन आर्य प्रधान, श्री संदीप आर्य मंत्री, श्री अमित शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य समाज हापुड़, श्रीमती वीणा आर्या प्रधाना, श्रीमती प्रतिभा भूषण मंत्राणि, श्रीमती रेखा गोयल कोषाध्यक्ष स्त्री आर्य समाज हापुड़, श्री अशोक कुमार आर्य प्रधान, श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य मंत्री एवं श्री पवन आर्य कोषाध्यक्ष जिला सभा हापुड़ आदि महानुभावों ने अपने समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के सहयोग से इस आयोजन को सफल बनाया। इस पूरे कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा पर श्री धमेन्द्र शास्त्री जी सुशोभित रहे तथा युवा वैदिक विद्वान् आचार्य संजय याज्ञिक मेरठ के ओजस्वी व्याख्यान तथा श्री अभिषेक शास्त्री महाराष्ट्र के भजनों की सुन्दर प्रस्तुति निरन्तर चलती रही।

श्री बलराम आर्य, ग्राम–गंगाना, तह.–गोहाना, जिला–सोनीपत के सेवा निवृत्त होने पर सम्मान समारोह में स्वामी आर्यवेश जी हुए सम्मिलित

प्रिंसिपल आजाद सिंह जी ने किया समारोह का संयोजन

बहन प्रवेश एवं पूनम आर्या ने भी दी अपनी शुभकामनाएं

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री बलराम आर्य जी ने सेवानिवृत्त होने के उपरान्त अपने पैतृक गांव गंगाना, तह.–गोहाना, जिला–सोनीपत में यज्ञ एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि के रूप में सम्मिलित हुए तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री प्रिंसिपल आजाद सिंह जी ने समारोह का संयोजन किया। समारोह में गांव तथा क्षेत्र के सैकड़ों गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया तथा श्री बलराम आर्य को शुभकामनाएं दी।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या एवं राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने भी उपस्थित होकर श्री बलराम आर्य जी को अपनी शुभकामनाएं दी। बलराम आर्य जी ने गांव के कई बुजुर्ग एवं प्रतिष्ठित महानुभावों का सम्मान किया। उन्हें कम्बल भेंट किये गये। इसी प्रकार स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या को भी बलराम जी ने विशेष रूप से सम्मानित किया। कार्यक्रम के उपरान्त सहभोज की भी समुचित व्यवस्था की गई थी जिसमें हजारों लोगों ने भोजन ग्रहण किया।

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

5 व 6 मार्च, 2024 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

5 मार्च को उद्घाटन सत्र में स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्बोधन

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री रहे मुख्य वक्ता

विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं पूर्व डीन प्रो. सुरेन्द्र कुमार जी ने किया मुख्य संयोजन

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में गत् 5 व 6 मार्च, 2024 को अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का भव्य आयोजन महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त लब्ध प्रतिष्ठि विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डॉ. सोमदेव शतांशु, पद्मश्री डॉ. सुकामा आचार्या आदि विद्वानों की गरिमामयि उपस्थिति रही। सत्र की अध्यक्षता महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजवीर सिंह जी ने की तथा संयोजन डॉ. सुनीता सैनी अध्यक्ष संस्कृत विभाग ने संभाला। सर्वप्रथम विश्वविद्यालय कुलगीत गाया गया फिर अतिथियों का स्वागत एवं स्वागत भाषण डॉ. सुरेन्द्र जी ने दिया। यज्ञशाला समिति के छात्र–छात्राओं द्वारा दयानन्द स्तवन प्रस्तुत किया गया। अन्त में प्रो. राजवीर सिंह जी का अध्यक्षीय सम्बोधन हुआ।

द्वितीय सत्र 2 बजे से सायं 4.30 बजे तक चला जिसमें प्रो. नरेश धीमान अध्यक्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती शोध पीठ अजमेर, प्रो. बलवीर आचार्य पूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, डॉ. सुनीता सैनी अध्यक्ष संस्कृत विभाग, प्रो. रणवीर सिंह पूर्व अध्यक्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती शोध पीठ, केन्द्रीय विश्वविद्यालय पाली, हरियाणा का अध्यक्षीय भाषण हुआ। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. श्रीभगवान सहायक आचार्य संस्कृत विभाग ने दिया।

तृतीय सत्र सायं 4.30 से 6.30 बजे तक रहा जिसमें डॉ. रामचन्द्र पाटिल आर्य समाज लन्दन, डॉ. सतीश प्रकाश, महर्षि दयानन्द गुरुकुल गयाना दक्षिण अफ्रीका, श्री विश्रुत आर्य आर्य समाज अटलांटा अमेरिका, प्रो. माधव प्रसाद उपाध्याय त्रिभुवन विश्वविद्यालय नेपाल, डॉ. भूषण चमन पर्यावरण वैज्ञानिक मॉरीशस आदि के ऑनलाईन व्याख्यान हुए तथा प्रो. सुरेन्द्र कुमार निदेशक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय एवं वैदिक अध्ययन केन्द्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

6 मार्च, 2024 को प्रातः 9.30 से 11.30 बजे तक प्रथम सत्र चला जिसमें डॉ. अमरजीत शास्त्री न्यूयार्क अमेरिका, प्रो. विनय विद्यालंकार चम्पावत उत्तराखण्ड, डॉ. रमेश गुप्ता न्यू जर्सी, अमेरिका, प्रो. विरेन्द्र अलंकार अध्यक्ष दयानन्द शोध पीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ आदि के व्याख्यान हुए तथा अध्यक्षीय भाषण डॉ. जगदेव सिंह विद्यालंकर पूर्व प्रिंसिपल रोहतक का हुआ। डॉ. सुषमा नारा सहायक आचार्य संस्कृत विभाग म.द. विश्वविद्यालय, रोहतक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

11.30 से 1 बजे तक समापन सत्र हुआ। जिसमें डॉ. वेदपाल आचार्य संरक्षण परोपकारिणी सभा अजमेर, विशिष्ट अतिथि एवं प्रो. अनूप सिंह मान अध्यक्ष रहे। डॉ. सुनीता सैनी ने संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा प्रो. सुरेन्द्र कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। यह संगोष्ठी अत्यन्त प्रभावशाली रही।

बहन प्रवेश आर्या जी के जन्मदिवस 12 फरवरी, 2024 को विशेष यज्ञ का आयोजन

आर्य जगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने दी हार्दिक शुभकामना

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक एवं तपस्विनी बहन प्रवेश आर्या जी का जन्मदिन 12 फरवरी, 2024 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, बहन पूनम आर्या, श्री अर्जुन सिंह डी.एस.पी, श्री प्रदीप कुमार आदि ने अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देकर बहन जी के स्वस्थ एवं उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर विशेष यज्ञ किया गया। जिसमें बहन

प्रवेश आर्या जी को बधाई देने के लिए पधारीं सैकड़ों बहनों आहुतियां डाली। यज्ञ स्वामी आर्यवेश जी ने सम्पन्न कराया। कार्यक्रम के उपरान्त सभी को मिष्ठान प्रसाद स्वरूप भेंट किया गया और सभी महिलाओं को वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया। बहन प्रवेश जी ने सभी का अपनी ओर से आभार दर्शाते हुए कहा कि आपलोगों का स्नेह ऐसे ही मिलता रहे, ऐसी मेरी कामना है।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आ५, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।